प्राचीनों की योग्यताएं तथा नियुक्ति

प्रभु की कलीसिया की मण्डली परमेश्वर द्वारा दी गई प्राचीनों की भूमिका को निभाने के लिए उन्हें कैसे नियुक्त करती है? इसे कम से कम शब्दों में कहें, तो नियुक्त किए जाने वाले (1) पुरुष उस पद के योग्य हों, और (2) उन्हें उसी काम के लिए नियुक्त किया जाना चाहिए। योग्य होने के लिए उनमें क्या गुण होने आवश्यक हैं? फिर योग्य लोगों को नियुक्त कैसे किया जाना चाहिए? बाइबल के अनुसार अगुआई से जुड़ी कोई भी चर्चा करते समय इन दो प्रश्नों का उत्तर देना आवश्यक है।

प्राचीनों की योग्यताएं

जब भी किसी स्थानीय कलीसिया की अगुआई के लिए प्राचीनों या ऐल्डरों के ठहराए जाने की बात होती है, तो सबसे अधिक चर्चा उन की योग्यताओं पर ही होती है। क्या किसी प्राचीन या ऐल्डर के एक से अधिक बच्चे होने ज़रूरी हैं? क्या उसके सभी बच्चों का विश्वासी मसीही होना आवश्यक है? पत्नी की मृत्यु हो जाने पर क्या उसे ऐल्डर के पद से इस्तीफा दे देना चाहिए? ''योग्यताओं'' के बारे में हमारी पहले से बनी धारणा और प्राचीनों के काम से सम्बन्ध न रखने की बात से कुछ कमज़ोर प्राथमिकताएं मिल सकती हैं। फिर भी इसमें सुझाव मिलता है कि किसी ऐल्डर को नियुक्त करने के लिए आदमी में आवश्यक योग्यताओं को समझने के लिए हमें परमेश्वर की अगुआई मांगनी चाहिए।

योग्यताओं की सूची

प्राचीनों की योग्यताएं पवित्र शास्त्र के दो भागों में दी गई हैं। पहला 1 तीमुथियुस 3:2-7 में है जो इस वाक्य से आरम्भ होता है ''यह बात सत्य है, कि जो अध्यक्ष होना चाहता है, तो वह भले काम की इच्छा करता है।'' (NASB: ''It is a trustworthy statement: if any man aspires to the office of overseer, it is a fine work he desires to do.''; NRSV: ''The saying is sure: whoever aspires to the office of bishop desires a noble task''; KJV: ''If a man desire the office of a bishop, he desireth a good work.'') इससे बहुत से लोगों को यह लगने लगा है कि प्राचीन या ऐल्डर बनने की ''इच्छा'' या अभिलाषा, प्राचीन बनने की एक योग्यता है

जबकि ऐसा नहीं है। लेकिन सच्चाई यह है कि प्राचीन के रूप में सेवा करने को तैयार अर्थात उस काम पर नियुज्त होने से पहले व्यज़ित कम से कम वहां तक पहुंचने की ''इच्छा'' अवश्य करता हो।

पौलुस ने ऐल्डर में पाई जाने वाली अन्य विशेषताओं का भी उल्लेख किया है। नीचे 1 तीमु. 3:2-7 के शज़्दों को और स्पष्ट करने के लिए अंग्रेज़ी भाषा के वैकल्पिक अनुवाद दिए गए हैं।[1]

1. ''*निर्दोष*''; KJV-''blameless''; ASV-''without reproach''; Knox-''one with whom no fault can be found''; Phi- ''of blameless reputation''; Tay-''whose life cannot be spoken against''; RSV, NIV, NRSV-''above reproach.''

2. ''*एक ही पत्नी का पति*'' KJV, RSV-''the husband of one wife''; Wms-''must have only one wife''; NEB-''faithful to his one wife''; Mof, NRSV- ''married only once''; NIV-''the husband of but one wife.''

3. ''*संयमी, सुशील, सज्य*''; KJV-''vigilant, sober, of good behaviour''; RSV-''temperate, sensible, dignified''; ASV-''temperate, sober-minded, respectable''; NIV-''temperate, self-controlled, respectable''; NRSV-''temperate, sensible, respectable.''

4. ''*पहुनाई करने वाला*''; KJV-''given to hospitality''; Bas-''opening his house freely to guests''; Alf, RSV, NIV, NRSV-''hospitable.''

5. ''सिखाने में निपुण''; KJV, NIV-''apt to teach''; RSV, NRSV-''an apt teacher''; Con-''skilled in teaching''; Wey-''with a gift for teaching''; Ber-''qualified to teach''; NEB-''a good teacher.''

6. ''*पियज़्कड़ या मार पीट करने वाला न हो*''; KJV-''not given to wine, no striker''; RSV-''no drunkard, not violent''; ASV-''no brawler, no striker''; NASB-''not addicted to wine or pugnacious''; NIV-''not given to much wine, not violent but gentle''; NRSV-''not a drunkard, not violent.''

7. ''*कोमल हो, न झगड़ालू और न लोभी हो*''; KJV-''patient, not a brawler, not covetous''; RSV, NRSV-''gentle, not quarrelsome, and no lover of money''; ASV-''gentle, not contentious, no lover of money''; NEB-''of a forbearing disposition, avoiding quarrels''; Phi-''not be a controversialist nor must he be fond of money-grabbing''; NIV-''not quarrelsome, not a lover of money.''

8. ''*अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो*''; KJV-''one that ruleth well his

own house''; RSV, NRSV-''must manage his own household well''; Con-''ruling his own household well''; Mof-''able to manage his own household properly''; Beck-''should manage his own family well''; NIV-''must manage his own family well.''

9. ''*लड़के बालों को सारी गज़्भीरता से अधीन रखता हो*''; KJV-''having his children in subjection with all gravity''; Wey-''keeping his children under control with true dignity''; RSV, NRSV-''keeping his children submissive and respectful in every way''; TCNT-''whose children are kept under control and well-behaved''; NIV-''his children obey him with proper respect.''

10. ''*नया चेला न हो* ''; KJV -''not a novice''; ASV-''not a new convert''; Tay-''not ... a new Christian''; Mon, RSV, NIV, NRSV-''must not be a recent convert.''

11. ''*कलीसिया के बाहर उसका अच्छा नाम हो* ''; KJV-''must have a good report of them which are without''; RSV, NRSV-''well thought of by outsiders''; TCNT-''well spoken of by outsiders''; NEB-''must moreover have a good reputation with the non-Christian public''; NIV-''must also have a good reputation with outsiders.''

तीतुस 1:5-9 में निज़्नलिखित योग्यताएं मिलती हैं:

1. ''*निर्दोष*''; KJV, NIV, RSV-''blameless''; TCNT-''of irreproachable character''; Phi-''of unquestionable integrity''; Nor-''have a reputation beyond reproach.''

2. ''*उसके बच्चे विश्वासी हों*''; KJV-''having faithful children'', RSV-''his children are believers''; ASV-''having children that believe''; Knox-''one whose children hold the faith''; TCNT-''whose children are Christians''; NIV-''whose children believe''; NRSV-''whose children are believers.''

3. ''*उसके बच्चों पर लुचपन या निरंकुशता का दोष न हो*''; KJV-(having faithful children who are)''not accused of riot or unruly''; RSV-''not open to the charge of being profligate or insubordinate''; Phi-''not likely to be accused of loose living or lawbreaking''; NIV-''not open to the charge of being wild and disobedient''; NRSV-''not accused of debauchery and not rebellious.''

4. ''*हठी, या क्रोधी न हो* ''; KJV-''not selfwilled, not soon angry''; RSV, NRSV-''not arrogant or quick-tempered''; NEB-''must not be

overbearing or short-tempered''; Knox-''he must not be an obstinate or quarrelsome man''; NIV-''not overbearing, not quick-tempered.''

5. ''*पियक्कड़ और मार पीट करने वाला न हो*''; KJV-''not given to wine, no striker''; Mof, RSV-''not a drunkard or violent''; CON-''not a lover of wine, not given to brawls''; NIV-''not given to much wine, not violent''; NRSV-''not addicted to wine or violent.''

6. ''*नीच कमाई का लोभी न हो*''; KJV-''not given to filthy lucre''; RSV, NRSV-''not greedy for gain''; Nor-''not addicted to dishonest gain''; TCNT-''or to questionable money-making''; Mof-''or addicted to pilfering''; NIV-''not pursuing dishonest gain.''

7. ''*पहुनाई करने वाला, भलाई चाहने वाला*''; KJV-''a lover of hospitality, a lover of good men''; RSV, NRSV-''hospitable, a lover of goodness''; Bas-''opening his house freely to guests, a lover of what is good''; NEB-''hospitable, rightminded''; NIV-''hospitable, a lover of what is good.''

8. ''*संयमी, न्यायी, पवित्र, और जितेन्द्रिय हो*''; KJV-''sober, just, holy, temperate''; RSV-''master of himself, upright, holy, and self-controlled''; TCNT-''discreet, upright, a man of holy life''; NIV-''self-controlled, upright, holy, and disciplined''; NRSV-''prudent, upright, devout, and self-controlled.''

9. ''*विश्वासयोग्य वचन पर जो धर्मोपदेश के अनुसार है, स्थिर रहने वाला हो*''; KJV-''holding fast the faithful word as he hath been taught''; RSV-''must hold firm to the sure word as taught''; Wms-''continues to cling to the trustworthy message ...''; NIV-''must hold firmly to the trustworthy message as it has been taught''; NRSV-''must have a firm grasp of the word that is trustworthy in accordance with the teaching.''

इन योग्यताओं को कई शीर्षकों में बांटा जा सकता है। डिक मार्सियर ने इन्हें छह वर्गों में बांटा है:

1. *सामुदायिक योग्यताएं।* वह ''निर्दोष'' होना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:2)। लोगों में उसका आदर होना चाहिए। यदि कोई उसके चरित्र पर आक्रमण करे तो किसी को विश्वास न हो। फिर, ''बाहर वालों में भी वह सुनाम'' होना चाहिए (1 तीमु. 3:2)। प्राचीन या ऐल्डर के रूप में सेवा करने वाला व्यक्ति ऐसा होना चाहिए जिसका विश्वासियों के साथ - साथ कलीसिया के बाहर के लोगों में भी आदर हो।

2. *चरित्र की योग्यताएं।* वह ''संयमी, सुशील, सज्य'' हो (1 तीमु. 3:2)। वह ''पियज़्कड़ न'' हो (1 तीमु. 3:3)। ...

3. *मानसिक योग्यताएं।* उसे ''जितेन्द्रिय'' अर्थात अनुशासित व्यज़्ति होना चाहिए (तीतुस 1:8)। वह ''सिखाने के योग्य'' होना चाहिए (1 तीमु. 3:2)। किसी को सिखाने से पहले स्वयं सीखना आवश्यक है। ... अपने ज्ञान तथा मानसिक कौशल से उसे दूसरों को ''खरी शिक्षा से उपदेश'' देने के योग्य होना चाहिए (तीतुस 1:9)।

4. *व्यज़्तित्व की योग्यताएं।* हो सकता है कि किसी के पास सभी ''तथ्य'' हों, परन्तु यदि वह अपने जीवन में मसीह को नहीं दिखा सकता, तो वह ऐसा अगुआ नहीं है जो परमेश्वर को पसन्द है। आवश्यक है कि वह न ''झगड़ालू, और न लोभी हो'' (1 तीमु. 3:3)। वह ''हठी, क्रोधी या मार पीट करने वाला'' व्यज़्ति नहीं होना चाहिए (तीतुस 1:7)।

5. *पारिवारिक योग्यताएं।* पौलुस का प्रश्न था कि ''जब कोई अपने घर का ही प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली ज़्योंकर करेगा'' (1 तीमु. 3:5)।

6. *अनुभव की योग्यताएं।* वह ''नया चेला'' नहीं होना चाहिए (1 तीमु. 3:6)। बीज की जड़ें अंकुरित होकर पौधा बनने के बाद ही फल लगना चाहिए। प्राचीन या ऐल्डर बनने के लिए समय लगता है।[2]

योग्यताओं को लागू करना

दोनों सूचियों के सज़्बन्ध में प्रश्नों की भरमार है। कुछ लोगों को संदेह है कि इन विशेषताओं को पौलुस के समय में भी, ''योग्यताओं'' के रूप में माना जाता था। कुछ लोगों का मानना है कि पहली शताज़्दी में ये योग्यताएं होनी आवश्यक थीं, परन्तु आज इनकी ज़रूरत नहीं है। तीमुथियुस तथा तीतुस की पत्रियों में इन सूचियों के एक समान न होने के कारण बहुत से लोगों का कहना है कि आधिकारिक योग्यताओं की कठोर सूची के बजाय ये सामान्य मार्गदर्शक या सुझाव ही होंगे। उन लोगों में भी जो इन सूचियों में ऐल्डर बनने के लिए बताई गई योग्यताओं को मानते हैं, विचारों की भिन्नता पाई जाती है। ''बच्चे विश्वासी हों'' का ज़्या अर्थ है? ''एक ही पत्नी का पति हो'' का ज़्या अर्थ है? कोई प्राचीन या ऐल्डर ''सिखाने के योग्य'' कब बनता है?

प्राचीनों की योग्यताओं के सज़्बन्ध में विवाद होने पर, मण्डली को ज़्या करना चाहिए? कुछ अवलोकन या सुझाव दिए गए हैं जो मसीही लोगों के सामने इन प्रश्नों के उठने पर सहायक हो सकते हैं।

पहली योग्यता, जिसमें बाकी की सारी योग्यताएं समा जाती हैं, यही है कि ऐल्डर के लिए विश्वासी मसीही होना आवश्यक है। हो सकता है कि कोई मण्डली अन्य प्रश्नों की चर्चा में इतनी लीन हो जाए कि सदस्य सबसे स्पष्ट प्रश्न अर्थात यह कि ''ज़्या वह प्रभु की कलीसिया का विश्वासी सदस्य है?'' पूछना ही भूल जाएं।

कई बार हम उन योग्यताओं पर अनावश्यक अर्थात हद से ज्यादा ज़ोर देने लगते हैं जिनका शायद प्राचीन द्वारा झुंड की अगुआई करने की योग्यता से कोई सम्बन्ध नहीं होता है या बहुत कम होता है। चाहिए तो यह कि हम केवल कुछ ही योग्यताओं पर ध्यान देकर अन्य बातों की उपेक्षा न करें।

इनमें से अधिकतर योग्यताएं हर मसीही में होनी आवश्यक हैं। नीचे दिए गए चार्ट पर विचार करें (पृष्ठ 42 पर चार्ट देखें)। प्राचीन अन्य मसीहियों से ऊंचे मापदण्ड पर नहीं, बल्कि बहुत हद तक, वह एक विश्वासी मसीही ही है जो आत्मिक परिपक्वता के स्तर पर पहुंच गया है जहां तक दूसरे मसीही पहुंचने के प्रयास में हैं।

अधिकतर योग्यताओं की एक सीमा है। ज़्योंकि हम सब पाप और गलतियां करते हैं, इसलिए यह अपेक्षा की जानी चाहिए कि प्राचीन 100 प्रतिशत ''संयमी, सुशील, सज्य, पवित्र और अनुशासित'' होगा? कुल मिलाकर शत प्रतिशत या पवित्र होना कैसा होगा? इसलिए हमें प्रचारक या किसी अन्य सदस्य में इन सभी गुणों में से हर एक के होने की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। बल्कि हमें यही अपेक्षा करनी चाहिए कि प्राचीनों में बहुत हद तक ये गुण पाए जाएं। फिर भी, इसका यह अर्थ नहीं निकालना चाहिए कि योग्यताएं होना ज़रूरी नहीं। यद्यपि योग्यताएं कुछ सीमा तक होती हैं, परन्तु *प्राचीन को याद रखना चाहिए कि उसमें ये गुण होने आवश्यक हैं।*

हमें उस उद्देश्य को पूरा करने के लिए प्रयास करना चाहिए जो इन योग्यताओं के पीछे है। कुछ मामलों में उद्देश्य दिया होता है। प्राचीन ''अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करने वाला ...'' होना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:4)। ज़्यों? ''जब कोई अपने घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली ज़्योंकर करेगा'' (1 तीमुथियुस 3:5)। वह ''नया चेला'' नहीं होना चाहिए। ज़्यों? ज़्योंकि नया चेला होने पर उसे ''अभिमान करके शैतान का सा दण्ड'' (1 तीमुथियुस 3:6) मिल सकता है। वह ''कलीसिया के बाहर के लोगों में सुनाम होना चाहिए।'' ज़्यों? वरना वह ''निन्दित होकर शैतान के फंदे में फंस'' (1 तीमुथियुस 3:7) सकता है। वह ''विश्वास के वचन'' में स्थिर रहने वाला हो। ज़्यों? ''ताकि खरी शिक्षा से उपदेश दे सके, और विवादियों का मुंह भी बन्द कर सके'' (तीतुस 1:9)। उद्देश्य स्पष्ट तो नहीं किया गया, परन्तु हमें इसे निर्धारित करने की कोशिश करनी चाहिए।

प्रत्येक योग्यता के लिए कारण पर विचार करने से हमारे निर्णय प्रभावित हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, योग्यता के पीछे उद्देश्य पर विचार करने से हमें यह समझने में सहायता मिलेगी कि बच्चों के विश्वासी होने की शर्त का (तीतुस 1:6) एक बच्चे का पिता होने की योग्यता से कोई सम्बन्ध नहीं है; इसलिए, गोद लिया गया बच्चा (या बच्चे) या पाला हुआ बच्चा (या बच्चे) परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीवन बिताने के लिए व्यक्ति की योग्यता की उस शर्त को पूरा कर देगा?।

हमें इन योग्यताओं से जुड़े दो चरमों अर्थात उन्हें इतनी कठोरता से लागू करने से कि किसी मनुष्य में ये गुण ही न हों और यह कहने से कि ''कुछ भी चलता है'' बचना चाहिए।

कुछ लोग प्राचीनों के लिए असंभव शर्तें ठहराते हैं, स्पष्टतया वे यह मानते हैं कि प्राचीन होने का अर्थ यह है कि उसे सिद्ध होना चाहिए और उसे कोई गलत काम नहीं किया होना चाहिए। इसका अर्थ यह होगा कि कोई भी मनुष्य कभी भी चाहे वह बाइबल के समय में हो या आज के समय में प्राचीन बनने के योग्य नहीं बन सकता। कुछ लोगों का मानना है कि ऐल्डर के लिए ''सिखाने के योग्य'' होना आवश्यक है इसलिए प्राचीन बनने के लिए बहुत अच्छा प्रचारक तथा शिक्षक होना आवश्यक है।

दूसरों के पास संभवत: कोई मापदण्ड ही नहीं है। लगता है कि उनके विचार में यदि कोई मसीही विवाहित है और उसके बच्चे हैं जिनका बपतिस्मा हो चुका है, तो वह स्वत: ही प्राचीन बनने के योग्य हो जाता है, चाहे उसमें दूसरी योग्यताएं न भी हों। ऐसा हो सकता है कि मण्डलियां इस विचार से कि वे ''काम में बढ़'' जाएंगे, अयोग्य पुरुषों को प्राचीन बना लें। कुछ मण्डलियों में, ऐल्डर की नियुक्ति प्रसिद्धि पाने या समाज में प्रभावशाली होने का ढंग हो सकता है, चाहे उनमें आत्मिक योग्यताएं हों या न हों।

एक तरफ तो, बहुत ही छोटी-छोटी बातों पर ध्यान करने और दूसरी ओर सभी सीमाओं की उपेक्षा करने के बीच कहीं एक बीच का स्थान है जिसमें कलीसिया उन लोगों को ढूंढ़कर नियुक्त कर सकती है जो सिद्ध तो नहीं हैं, लेकिन ऐल्डर बनने के योग्य हैं।

अन्त में हमें यह निर्णय हर एक मण्डली पर छोड़ देना चाहिए कि वह स्वयं तय करे कि प्राचीन बनने की योग्यताएं किन लोगों में हैं। यदि मण्डलियों की स्वायतज्ञा का अर्थ कुछ ज़ी है, तो इसका अर्थ यह है कि किसी मण्डली को यह अधिकार है कि वह (1) तय करे कि ''बच्चे विश्वासी हों,'' ''एक ही पत्नी का पति'' होने और ''सिखाने के योग्य'' का ज़्या अर्थ है और यह भी निर्णय लेने का अधिकार हो कि दूसरी योग्यताओं में ज़्या है, और (2) उनकी योग्यताओं और अपने सदस्यों के इसके ज्ञान को जानते हुए प्राचीनों के रूप में उन्हें नियुक्त करने का निर्णय लेने का अधिकार है।

प्राचीनों की योग्यताओं की तुलना लीडरशिप की योग्यताओं से करना

लीडरशिप के गुणों के साथ, जिनका आज सुझाव दिया जाता है प्राचीनों की योग्यताओं से तुलना कैसे की जा सकती है? अपनी पुस्तक में जेज़्स विलबर्न[5] ने ''लीडरशिप की दस विशेषताओं'' की चर्चा की है: (1) लीडरशिप में इच्छा, (2) जोश, (3) आत्मविश्वास, (4) विनम्रता, (5) विकास करने की आदत, (6) दर्शन, (7) ज्ञान, (8) बांटने वाला मन, (9) कल्पना, (10) निर्णय लेना होता है। कैनथ गैंगेल ने ''लीडरशिप के पांच प्रमुख तथा छह सहायक अंश में'' सूची देते हुए, अपनी पुस्तक में एक और स्रोत को उद्धृत किया:

> ... लेखक ... प्राथमिक तथ्यों की परिभाषा समानुभूति, सामूहिक सदस्यता, विचार, आवेश (बातूनी होना, खुशी, मिलनसारता, जोश, सार्थकता, सुचेतता, नयापन), और भावनात्मक स्थिरता के रूप में करते हैं।

सहायक विशेषताओं की सूची में अगुआई करने की इच्छा, सूझ – बूझ, क्षमता, संगति, आत्मविश्वास और लीडरशिप को साझा करने की योग्यता शामिल है।[4]

इन सूचियों की तुलना 1 तीमुथियुस और तीतुस से करने पर समानताओं के बजाय भिन्नताएं अधिक मिलती हैं।[5] उदाहरण के लिए पौलुस ने प्राचीनों के लिए जोश, कल्पना, आत्मविश्वास, दर्शन, समझ या सार्थकता की आवश्यकता के बारे में कुछ नहीं कहा। इसके अलावा, यदि हमने लीडरशिप की विशेषताओं की सूची बनाने की कोशिश करनी हो, जो हमें बिज़नेस या खेलों या सेना में मिलती है, तो हम कौन सी विशेषताएं मिलाएंगे? ईमानदारी से उज़र दें, तो विशेषताओं की अपनी सूची में हम सज़्भवतया 1 तीमुथियुस 3 और तीतुस 1 में मिलने वाली योग्यताओं की बात नहीं करेंगे।

इसमें ज़्या अनुमान लगाना चाहिए? यह निष्कर्ष निकालना तर्कसंगत लगता है कि 1 तीमुथियुस 3 और तीतुस 1 में दी गई योग्यताएं *एक विशेष प्रकार की लीडरशिप के लिए एक विशेष प्रकार के व्यक्ति को चुनने के लिए* इस्तेमाल करने के उद्देश्य से दी गई हैं। इसका अर्थ यह है कि आवश्यक नहीं कि जिन लोगों में ये योग्यताएं हैं उनमें किसी और प्रकार की लीडरशिप के गुण हों, और आवश्यक नहीं कि जिन लोगों में किसी दूसरी तरह की लीडरशिप के गुण हैं वे इस तरह की लीडरशिप की योग्यताओं को पूरा करते हों! इसे समझकर हमें दो गलतियां करने से बचने में सहायता मिल सकती है: (1) यह सोच कि कुछ लोग इसलिए अयोग्य हैं ज़्योंकि वे दूसरे क्षेत्रों में अगुवे या लीडर नहीं हैं, और (2) यह सोच कि कुछ लोग इसलिए योग्य हैं कि वे दूसरे क्षेत्रों में अग्रणी हैं।

ऐल्डरों की नियुक्ति

कौन सा ढंग अपनाया जाना चाहिए जिससे स्थानीय कलीसिया में प्राचीनों के रूप में सेवा करने के लिए आदमियों को चुनकर नियुज़्त किया जा सके? नया नियम संकेत देता है कि एक घटना में एक सुसमाचार प्रचारक अर्थात इवैंजलिस्ट (तीतुस) ने प्राचीन ठहराए या उतारे (तीतुस 1:5) और एक दूसरी घटना में एक प्रेरित तथा उसके सहकर्मी (पौलुस और बरनबास) ने प्राचीन नियुज़्त किए थे (प्रेरितों 14:23)। परन्तु इसमें इन लोगों को प्राचीन नियुज़्त करते समय किस विशेष ढंग का इस्तेमाल किया गया था, यह पता नहीं चलता। सज़्भवत: उन्होंने कलीसिया की प्रक्रिया को शामिल किए बिना उस काम को करने के लिए प्राचीनों को चुनने का निर्णय अपने आप ही नहीं लिया था।

प्राचीनों को कैसे चुना जाना चाहिए? नया नियम इस प्रश्न का उज़र विशेष रूप से नहीं देता, बल्कि प्रेरितों 6 अध्याय में यह हमें पुरुषों को कलीसिया में एक विशेष कार्य के लिए अलग करने का एक उदाहरण उपलज़्ध कराता है। इस घटना में: (1) प्रेरितों ने उन पुरुषों के लिए, जिन्होंने इस काम को करना था कुछ योग्यताएं ठहराईं हैं: ''तब उन बारहों ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा, ... हे भाइयो,अपने में से सात सुनाम पुरुषों को, जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें''

(प्रेरितों 6:2, 3)। (2) कलीसिया ने मिलकर अपने बीच में से उन पुरुषों को चुना जिनमें ये गुण थे: ''यह बात सारी मण्डली को अच्छी लगी, और उन्होंने ... [सात पुरुषों को] चुन लिया'' (प्रेरितों 6:5)। (3) प्रेरितों ने, उन पर हाथ रखकर उन्हें काम पर लगा दिया (या उन्हें नियुज़्त कर दिया): ''और इन्हें प्रेरितों के साज़्हने खड़ा किया और उन्होंने प्रार्थना करके उन पर हाथ रखे'' (प्रेरितों 6:6)।

इस उदाहरण में आज प्राचीनों के चयन तथा नियुज़्ति के लिए एक अच्छा ढंग मिलता है: (1) योग्यताएं पहले ही प्रेरितों द्वारा ठहरा दी गई हैं। (2) इन योग्यताओं को मण्डली के सामने बताया जाता है, किसी इवैंजलिस्ट या उपदेशक के द्वारा जो प्राचीन होने की योग्यताओं पर चर्चा करता है। प्रभु के झुंड को चराने वाले लोगों को चुनने से पहले कलीसिया के सदस्यों को अच्छी तरह समझा देना चाहिए। (3) कलीसिया के सदस्य मिलकर यह फैसला करें कि उसके सदस्यों में से किन लोगों में ये योग्यताएं पाई जाती हैं। कलीसिया ही नये नियम की रूपरेखा पर चलते हुए अपने अगुओं का चयन करती है। (4) प्राचीनों को सार्वजनिक सेवा में उनके काम के लिए नियुज़्त कर दिया जाता (अलग किया) या ठहराया जाता है ।

सारांश

प्राचीनों की नियुज़्ति में बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। जैसे किसी ने कहा है, ऐल्डर ''उतारने'' से बनाना आसान है। किसी प्राचीन को जिसने बाद में अयोग्य होने की ठान ली हो, पद से हटाने का प्रयास करना कठिन है और अज़्सर इससे कलीसिया में बड़ी समस्याएं पैदा होती हैं। यदि पूरी तरह से एकमत न हों, तो ज्यादातर लोगों में इस बात पर सहमति होनी चाहिए कि किसी आदमी को ऐल्डर नियुज़्त करने से पहले उसमें नये नियम में बताई गई योग्यताएं हों। फिर भी, यदि यह लगे कि उसकी नियुज़्ति से बाद में ऐसी समस्याएं पैदा हो सकती हैं तो जहां तक सज़्भव हो उसे नियुज़्त ही नहीं किया जाए।

पाद टिप्पणियां

[1]अधिकतर वैकल्पिक अनुवाद कर्टिस वॉगन, सं. *द न्यू टैस्टामेन्ट फ्रॉम 26 ट्रांसलेशंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: ज़ोंडर्वन, 1967), से लिए गए हैं। संक्षेप रूपों का अर्थ पृष्ठ 17 पर मिल सकता है। [2]डिक मार्सियर, ''हू कैन सर्व ऐज़ ऐल्डर?'' *ईस्टसाइड बुलेटिन,* ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओज़्ला. (21 अज़्टूबर 1979)। [3]जेज़्स विल्बर्ड, *लीडरशिप फ़ॉर क्राइस्ट इन द लोकल चर्च* (विचिटा फॉल्स, टैज़्स,: फ़ेथ प्रैस, 1963), 20-54. [4]कैनथ ऑ. गैंगेल, *लीडरशिप ऑफ़ चर्च एजूकेशन* (शिकागो: मूडी प्रैस, 1970), 162, चार्ल्स ई. हैन्ड्री, और मुर्रे जी. रॉस, *न्यू अंडरस्टैंडिंग्स ऑफ़ लीडरशिप,* 43, 64-85 से उद्धृत करते हुए। [5]सच कहें तो, *लीडरशिप फ़ॉर क्राइस्ट इन द लोकल चर्च* में जेज़्स विल्बर्ड शायद स्थानीय कलीसिया में प्राचीन बनने की आवश्यक योग्यताओं की नहीं, बल्कि उन योग्यताओं की बात कर रहा था जो कलीसिया के अगुवे को अपने अन्दर लाने की कोशिश करनी चाहिए।

जो प्राचीनों के लिए चाहिए, वही सब मसीहियों के लिए आवश्यक

प्राचीनों के लिए	योग्यताएं	हर मसीही के लिए
1 तीमुथियुस 3:2	*निर्दोष (निष्कलंक)*	1 तीमुथियुस 5:7; 6:14
1 तीमुथियुस 3:2	*संयमी (चौकस)*	1 पतरस 1:13; 4:7; 5:8
1 तीमुथियुस 3:2	*सज्य (समझदार; गज़्भीर)*	तीतुस 2:2, 5; रोमियों 12:3
1 तीमुथियुस 3:2	*पहुनाई करने वाला*	रोमियों 12:13; इब्रानियों 13:2
		इब्रानियों 5:12
1 तीमुथियुस 3:2	*सिखाने में निपुण*	तीतुस 2:3; इफिसियों 5:18
1 तीमुथियुस 3:3	*पियज़्कड़ नहीं (शराबी नहीं)*	फिलिप्पियों 4:5; कुलुस्सियों 3:13;
1 तीमुथियुस 3:3	*कोमल (सहनशील)*	तीतुस 3:2
1 तीमुथियुस 3:3	*झगड़ालू नहीं (न झगड़ालू; न मारपीट करने वाला हो)*	याकूब 4:2; 2 तीमुथियुस 2:24
1 तीमुथियुस 3:3	*धन का लोभी न हो*	1 तीमु. 6:10; 2 तीमु. 3:2
1 तीमुथियुस 3:4	*बच्चे आज्ञाकारी, आदर करने वाले हों*	इफिसियों 6:1-4
1 तीमुथियुस 3:7	*बाहर वालों में सुनाम हो*	1 पतरस 2:12-16
तीतुस 1:8	*न्यायी (न्यायप्रिय)*	कुलुस्सियों 4:1
तीतुस 1:8	*(समर्पित) पवित्र*	इफिसियों 4:24; 1तीमु. 2:8
तीतुस 1:8	*आत्मसंयमी (मिताचारी)*	गलतियों 5:23